आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 06-02-15

हम भाग्यशाली बच्चों को आत्मा और परमात्मा का एक्यूरेट ज्ञान देकर हमें देही-अभिमानी बनने का अभ्यास कराने वाले, बेहद के टीचर, बाप ने कहा, मीठे बच्चे – तुम आत्माओं का स्वधर्म शान्ति है, तुम्हारा देश शान्तिधाम है, तुम आत्मा शान्त स्वरूप हो इसलिए तुम शान्ति मांग नहीं सकते.

बाबा ने हम बच्चों को हमारे सत्य स्वरूप आत्मा का और अपना सत्य स्वरूप परमात्मा का बड़ा गुह्य और एक्यूरेट ज्ञान अपने महा-वाक्यों में दिया हैं. ऐसा ज्ञान वेद, शास्त्रों, उपनिषद या घर्म-ग्रथों में कही नहीं हैं. बाबा ने हम आत्माओं के बारे में जो ज्ञान दिया है उससे आत्मा का स्वरूप, आत्मा का असूल घर, आत्मा का स्वधर्म, आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ, आत्मा में रहे दिव्य-गुणों और शक्तियाँ, आत्मा का मानव देह में स्थान, और आत्मा का सृष्टि चक्र के ड्रामा में पार्ट यह सब कुछ हमने जान लिया हैं. शिवबाबा ने अपना यानी परमात्मा का भी बहुत डिटेल (detail) में परिचय हम भाग्यशाली बच्चों को दिया हैं. इस ज्ञान से हमें परमात्मा का स्वरूप, परमात्मा का रहने का स्थान, परमात्मा की महिमा और परमात्मा का सृष्टि चक्र के ड्रामा में पार्ट यह सब बातों को हमने जान लिया हैं.

बाबा हमें यह ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम अपने में धारण करें. अपने को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करें, जिसे ही हमारे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म होते है. आत्मा पतित से पावन बनती जाती हैं. लेकिन हमारी आत्मा लास्ट ६३ जन्मो से माया की गुलाम है. अभी जब हमारी आत्मा माया की गुलामी से मुक्त होकर बाबा को याद करने का पुरुषार्थ करती है तो माया भी हमसे जोर से लड़ती हैं. यह लड़ाई भी गुप्त है जिसे ही महा-भारत की लड़ाई कहते हैं. जब हम आत्मायें माया से मुक्त होकर एक बाबा की याद में ही लगन-मगन होकर यह शरीर को छोड़, कर्मातित अवस्था को पायेंगे तो यह लड़ाई भी बंध हो जायेगी. फिर हम सतयुग के आरंभ में फिर से अपना पार्ट बजाने आयेंगे.

बाबा की आज की मुरली से हमारी आत्म-अभिमानी अवस्था को पक्की करने के लिए कहे गये कुछ महा-वाक्यों को फिर से बाबा की याद में रहकर पढ़ेंगे.

- बाबा कहते हैं बच्चों को जब ॐ शांति कहा जाता है तो बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए, क्योंकि आत्मा का स्वधर्म ही शांति हैं. तुम जानते हो हम आत्मायें शांतिधाम की रहने वाली हैं. फिर यहाँ आते है पार्ट बजाने. तो शरीर लेकर ही पार्ट बजायेंगे. पहले तुम आते हो सुखधाम में फिर आधाकल्प के बाद दुखधाम शुरु होता हैं. यह है आत्मा की ८४ जन्मो की कहानी. अभी भगवान स्वयं आकर तुम्हें अपने जन्मो की कहानी बताते हैं.

- बाबा कहते हैं अभी तुम बच्चों को बहुत देही-अभिमानी बनना हैं. अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना हैं. हम आत्माओं को शिवबाबा पढ़ा रहे हैं. शिवबाबा ही ज्ञान का सागर है जो हमें सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज बताते हैं. शिवबाबा तो अशरीरी है इसलिए कहते है अशरीरी बनो और मुझे याद करो.

- बाबा कहते हैं तुम बच्चे ही शिवबाबा को जानते हो. शिवबाबा ही कह सकते है - हे मेरे रुहानी लाड़ले बच्चों. ऐसे और कोई मनुष्य कह नहीं सकते. और कोई भी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दे न सके. ८४ जन्मो की सीढ़ी का राज और कोई समझा न सके, सिवाय एक निराकार बाप के. उस बाप की अभी कि ऐक्ट के आधार से ही भक्ति मार्ग में कितनी महिमा करते हैं. जैसे की बबूलनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, गोपेश्वर, रामेश्वर...आदि कितने हजारों नाम रख देते हैं - यह भी तुम्हीं जानते हो. तुम ही शिव-शक्तियाँ हो, जिन्होंने गुप्त वेश में आये हुए बाप को पहचान लिया हैं और उसकी श्रीमत् पर चलते हो.

- बाबा कहते है तुम बच्चे जानते हो - शिवबाबा, बाप तो सदा जागती ज्योत है, बाकी हमारी ज्योति उसने अभी जगाई हैं. तुम बच्चों ने अपनी आत्मा की ज्योत अभी योगबल से जगाई हैं. योगबल से ही तुम्हारी आत्मा पवित्र बनती हैं. यह बाप तुम्हें जो ज्ञान घन देता है उसे तुम अपनी जन्मो की कमाई करते हो. सारे कल्प के लिए श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाते हो.

ॐ शांति.